35

# जो घृणित हो उसके पास जाना

## मरकुस 5:1–20, एक निकट दृष्टि

कई साल पहले, एक टेलीफोन कज़्पनी ने टेलीविज़न पर एक बहुत ही प्रभावशाली विज्ञापन दिया था: ''रीच आउट एण्ड टच समवन।''[1] विचार यह था कि कोई दर्शक किसी की फोन कॉल की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, कोई जो ऐसी कॉल पर अतिप्रसन्न होगा। मेरे फोन बिल को देखकर आप बता सकते हैं कि मेरे घर के लोगों का मानना है कि हमें *बहुत से* लोगों तक ''पहुंचकर उन्हें टच करना'' चाहिए।

दूसरों तक पहुंचने का विचार नया नहीं है। आज तक का सबसे बड़ा रीच आउट एण्ड टच सम वन अर्थात ''बाहर जाओ और किसी को स्पर्श करो'' यीशु मसीह ही था। वह जहां भी गया, वहां उसने बीमार, अन्धे, लंगड़े, दुखी और पापी लोगों तक अपनी पहुंच बनाई और उन्हें ऐसा स्पर्श किया कि वे पहले जैसे बिल्कुल न रहे।[2] कलीसिया में हमें यीशु के पीछे चलना आवश्यक है (1 पतरस 2:21)। वह हमारा सिर है (इफिसियों 1:21, 22), और हमें चाहिए कि उसके हाथ, उसके पांव और उसके होंठ बनें।[3] महान आज्ञा अर्थात ग्रेट कमीशन के अनुसार (मज़्ी 28:18–20), यदि हम अपने जीवनों में सुसमाचार को लेकर लोगों तक नहीं पहुंचते तो हम प्रभु की कलीसिया के रूप में कार्य नहीं कर रहे हैं।

मरकुस 5 अध्याय यीशु के एक मनुष्य के पास अर्थात ऐसे मनुष्य के पास, जो अनाकर्षक और घिनौना था, पहुंचकर उसे स्पष्ट करने की कहानी बताता है। इस कहानी के मज़्ी के वृज़ांत दुष्टात्मा से ग्रस्त दो आदमियों की बात हैं, जबकि मरकुस और लूका केवल एक ही प्रमुख व्यज़्ति की बात है। मैं मरकुस की तरह दोनों में से अधिक बदनाम पर ध्यान दूंगा। हमारे लिए इस कहानी में दो महत्वपूर्ण सबक हैं।

## वास्तविकता (आयतें 1-5)

### वास्तविक समस्याएं

बाइबल का हमारा पाठ आरज़्भ होता है:

> वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे। और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला। वह कब्रों में रहा करता था। और कोई उसे सांकलों से भी न बान्ध सकता था। ज़्योंकि वह बार-बार बेड़ियों और सांकलों से बान्धा गया था, पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था (आयतें 1-5)।

इस दृश्य को मन में उतारें: एक लज़्बे, व्यस्त दिन के बाद आखिर शाम हो गई (4:35क)। मसीह ने अपने चेलों से कहा, "आओ हम पार चलें" (4:35ख)-अर्थात, गलील की झील के दूसरी ओर (देखें 4:36; 5:1)। वह कभी-कभी भीड़ में से अलग होने के लिए ऐसा करता था। सफ़र में थका हुआ होने के कारण यीशु को नींद आ गई (4:38)। सफ़र के दौरान एक भयंकर तूफ़ान आ गया, जिसे मसीह ने शांत किया (4:36-41)। हमारी कहानी के आरज़्भ में, प्रभु और उसके चेले झील के पूर्व में पांच-छह मील आगे निकलकर गिरासेनियों के देश में पहुंच गए थे (5:1)।

यदि यीशु आराम करने के लिए घनी आबादी वाले क्षेत्र में चला जाता, तो उसने आराम नहीं कर पाना था। बाइबल बताती है कि "जब वह नाव में से उतरा तो *तुरन्त* एक मनुष्य, जिसमें अशुद्ध आत्मा थी,[4] कब्रों से निकलकर उसे मिला" (आयत 2)। जोअ शुबर्ट ने लिखा है:

> वे झील के उस भाग पर थे जहां गलील की झील से घिरीं चूने की चट्टानों की चोटियों में बहुत सी गुफ़ाएं थीं। इन गुफ़ाओं में कई कब्रें थीं जिनमें बहुत सी लाशें पड़ी थीं। अपने समय पर यह एक डराने वाली जगह होती होगी। रात को तो यह अवश्य ही डरावनी लगती होगी। उन्हीं कब्रों[5] में से दुष्टात्मा से ग्रस्त वह आदमी आया था ...।[6]

यह आदमी कब्रों में ज़्यों रहता था? ज़्योंकि लोगों ने उसे समाज से निकाल दिया था। उस इलाके के लोगों ने उसे ज़ंजीरों और बेड़ियों से बान्धने की भी कोशिश की थी, पर किसी भी तरह का बन्धन उसे जकड़ न पाया था। अन्त में, इसी कारण उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया था।

1 से 5 आयतों की तस्वीर आपके ध्यान में है? यीशु के नाव से बाहर कदम रखते ही, एक पागल आदमी आ गया। वह नंगा और मैल से भरा था। उसका शरीर अपने बनाए ज़ज़्मों से भरा हुआ था। उसके बाल जुड़े हुए थे; उसकी आंखें खूंखार थीं। *यही* वह आदमी था, जिसे आवश्यकता थी कि यीशु उसके पास जाए। *यही* वह परीक्षा थी, जो किसी तक पहुंचने के लिए होने के लिए मसीह की थी।

**कल्पित बहाने**

विचार करें कि मसीह इस आवश्यकता पर ज़्या प्रतिक्रिया दे सकता था।

(1) वह कह सकता था, ''मैं बहुत थक चुका हूं। अब बहुत देर हो गई है। आज बहुत काम था!'' यीशु का दिन ऐसा ही व्यस्त था। हम समझ सकते हैं कि थकावट होने पर कैसा लगता है। बहुत से लोग दूसरों को अपने निकट ''बनाए रखने'' की कोशिश कर रहे हैं।[7] कुछ लोग बिलों का भुगतान करने के लिए ही कई-कई घण्टे काम करते हैं। कई परिवारों में, मां घर से दूर काम करती है, जिस कारण दिन भर काम करने के बाद हमारा समय और सारी ऊर्जा उसी में लग जाती है। हमारे पास दूसरों तक पहुंचने के लिए बहुत कम शज़्ति बची होती है; कलीसिया का काम हमारी व्यस्त और थका देने वाली समयसारणी में फिट नहीं बैठता।

(2) वह कह सकता था, ''यह *मेरी* ज़िज़्मेदारी नहीं है।'' इस व्यज़्ति का परिवार इसी क्षेत्र में रहता था (मरकुस 5:19; देखें लूका 8:39), सो वह कह सकता था, ''यह *उनकी* ज़िज़्मेदारी है। मैं गलील में कड़ी मेहनत कर रहा हूं और यहां कुछ आराम करने के लिए आया हूं। उसकी देखभाल के लिए किसी और को कह दो!'' हमारे समाज की बड़ी आवश्यकताओं में से एक निजी ज़िज़्मेदारी की भावना का होना है।[8] कलीसिया की बड़ी आवश्यकताओं में से एक निजी ज़िज़्मेदारी की भावना का होना है।[9]

(3) वह कह सकता था, ''मन परिवर्तन के लिए यह अच्छा 'आसार' *नहीं* है।'' मान लीजिए कि हम ने सुसमाचार में रुचि लेने वाले लोगों को ढूंढ़ने के लिए अपने इलाके में घर-घर जाने का फैसला किया। फिर मान लें कि जब दो कर्मी गली में जा रहे थे, तो मरकुस 5 अध्याय वाले आदमी की तरह ही दुष्टात्मा से झगड़ा करके एक खूंखार आदमी अन्धेरे में से निकल आता है। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि दोनों कर्मी वापस आकर यह *नहीं* बताएंगे कि वह आदमी सिखाने के लिए ''एक अच्छी सज़्भावना'' है! हम में से कई लोग ऐसे लोगों को ढूंढ़ना चाहते हैं, जो कुछ-कुछ हम जैसे ही हों और जो सच्चाई को सीखने की इच्छा रखते हों। हम में से कई लोग ऐसे हैं, जो किसी ऐसे व्यज़्ति के साथ, जो इस व्यज़्ति की तरह परेशान हों, अध्ययन *नहीं* करना चाहते।

(4) वह कह सकता था, ''तुज़्हें पता नहीं है कि इसमें बड़ा जोखिम है? यदि मैं उसकी सहायता करने का प्रयास करता हूं, तो हो सकता है कि इससे कुछ लाभ न हो, और लोग भी मुझ पर हंसें।'' किसी दूसरे तक पहुंचने का एक जोखिम यह है कि आपको अपने हाथ पर चांटा लग सकता है! ज़्या यह सच नहीं है कि हम कई बार अपने मित्रों और पड़ोसियों से परमेश्वर के वचन की बात इसीलिए नहीं कर पाते, ज़्योंकि हमें डर रहता है कि कहीं वे हमसे छूट न जाएं, हमसे प्रेम करना न छोड़ दें? जैसा कि हम देखेंगे, गिरासेन देश के अधिकतर लोगों ने इस सच्चाई की सराहना *नहीं* की कि मसीह दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यज़्ति तक पहुंच गया था बल्कि उन्होंने उससे वहां से चले जाने की विनती की (मरकुस 5:17)।

### वास्तविक चिन्ता

यीशु इनमें से, जिनका मैंने ऊपर उल्लेख किया है, कोई भी बहाना बना सकता था, परन्तु उसने कोई बहाना नहीं बनाया। प्राकृतिक बाधाओं को जो इस व्यक्ति में थीं, पार करने की क्षमता उसे किस ने दी? *लोगों के लिए प्यार में* मसीह लोक-हितैषी था; ज़्योंकि वह लोगों की परवाह करता था। यहां एक ऐसा आदमी था, जिसे उसकी आवश्यकता थी। हां, यह अप्रिय और घृणित था। वह निकाल दिया गया था; उसका जीवन उसके नियन्त्रण में नहीं था। वह अपने आप को हानि पहुंचाने वाला और शायद आत्महत्या करने वाला भी हो सकता था। तौ भी, वह ज़रूरतमंद व्यज़्ति था। इसलिए इस तथ्य के बावजूद कि यीशु थका हुआ था, इस तथ्य के बावजूद कि यह आदमी अनाकर्षित था, इस तथ्य के बावजूद कि दूसरे लोग शायद अपनी ज़िज़्मेदारियां पूरी नहीं कर रहे थे, मसीह ने जोखिम उठाया और उसके पास गया।

## प्रत्युज़र (आयतें 6-16)

### यीशु की सामर्थ

हम आगे पढ़ते हैं: ''वह [दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यज़्ति] यीशु को दूर से ही देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया और ऊंचे शज़्द से चिल्लाकर कहा; हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से ज़्या काम?'' (आयतें 6, 7क)। याकूब 2:19 ज़ोर देकर कहता है कि ''... दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।''

ये शज़्द उस आदमी के मुंह के थे: ''मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि मुझे पीड़ा न दे'' (आयत 7ख)। यह बात अजीब लगती है, ज़्योंकि यीशु तो उस आदमी को सताने के लिए नहीं, बल्कि चंगा करने के लिए आया था-परन्तु निश्चय ही उस आदमी में से दुष्टात्माएं ऐसा बोल रही थीं।

मज़ी के वृज़ांत के अनुसार, उन्होंने पूछा, ''ज़्या तू समय से पहिले हमें दु:ख देने यहां आया है?'' (मज़ी 8:29)। वह समय आ रहा है, जब शैतान की सेनाओं का अपने स्वामी सहित न्याय किया जाएगा और उन्हें सदा-सदा के लिए कष्ट सहने के लिए आग की झील में डाल दिया जाएगा (देखें 2 पतरस 2:4; प्रकाशितवाज़्य 19:20; 20:10)। आयत 8 बताती है कि अपने भविष्य के बारे में दुष्टात्माएं चिन्तित ज़्यों थीं: ''ज़्योंकि उसने कहा था, हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!''

यीशु ने पूछा, ''तेरा ज़्या नाम है?'' उस आदमी ने उज़र दिया, ''मेरा नाम सेना है; ज़्योंकि हम बहुत हैं'' (आयत 9)। सेना (हिन्दी बाइबल में टिप्पणी में मूल शज़्द लिगियोन अर्थात 6000 सिपाहियों की सेना दिया गया है-अनुवादक) रोमी रेजिमेंट की लगभग छह हज़ार सिपाहियों की टुकड़ी होती थी। ज़रूरी नहीं, कि उस आदमी में छह हज़ार दुष्टात्माएं ही हों, परन्तु इस शज़्द से संकेत मिलता है कि उसमें असंज़्य दुष्टात्माएं थीं। (जल्दी ही, उन्होंने *दो हज़ार* सूअरों में चले जाना था [आयत 13]।)

ध्यान दें कि उस आदमी ने पहले एक वचन ''*मेरा* नाम सेना है'' का इस्तेमाल किया। फिर उसने बहुवचन ''क्योंकि *हम* बहुत हैं'' का इस्तेमाल किया। मैं उस व्यक्ति की उलझन की कल्पना भी नहीं कर सकता, जिसके शरीर और मन को शैतानी सेनाओं ने नियन्त्रित किया हुआ था। उसने पागल तो होना ही था।[10]

दुष्टात्माएं मसीह से विनती करस्

> और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। यीशु के पास आकर, उन्होंने उस को जिसमें दुष्टात्माएं थीं, अर्थात् जिस में सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखा (आयतें 14ख, 15क)।

उन्होंने देखा कि जो आदमी पहले दीवाना था, अब शान्त ''बैठा था।'' अब वह नंगा नहीं, बल्कि ''कपड़े पहने'' हुए था। अब वह पागल नहीं, बल्कि ''सचेत'' था। यीशु ऐसे आदमी के पास पहुंचा, जिससे लोग प्रेम नहीं करते थे–और उसका जीवन पूरी तरह बदल गया!

**यीशु की प्रेरणा**

यीशु ऐसे आदमी, जो घृणित था, के पास कैसे पहुंच सका? मैंने पहले कहा था कि वह इसलिए पहुंचा, क्योंकि वह लोगों से प्रेम करता था, पर इसमें मैं कुछ नये विचार भी जोड़ता हूं:

(1) वह लोगों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील था। वह लोगों की सहायता करने के अवसर की तलाश में रहता था। लगता नहीं था कि दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को आवश्यकता थी, परन्तु वह एक प्राणी था, जिसे ज़रूरत थी और यीशु ने उसकी सहायता की।

(2) वह वहीं से आरम्भ करने को तैयार था, जहां वह ज़रूरतमंद व्यक्ति था, न कि वहां से जहां वह उसे चाहता था। वह उस जंगली आदमी से कह सकता था, ''पहले मैं तुझे नहला दूं और तेरे लिए कुछ कपड़े ढूंढ़ लूं, तब हम तेरी दुष्टात्मा से ग्रस्त होने की समस्या का हल करेंगे।'' इसके विपरीत, उसने उस व्यक्ति के पहनावे की ओर ध्यान नहीं दिया और दुष्टात्मा को निकाल दिया। इसके बाद बाइबल कहती है कि उस आदमी ने कपड़े पहने। कई बार लोगों तक पहुंचने पर, हमारे लिए सबसे आवश्यक उनके जीवनों को बदलने और फिर उन्हें प्रभु की इच्छा समझाने में उनकी सहायता करना होता है। हमें वहीं से आरम्भ करना चाहिए, जहां लोग हैं, न कि वहां से जहां हम चाहते हैं कि उन्हें होना चाहिए था।

(3) वह उस आदमी से बात करने और उसकी समस्याएं सुनने को तैयार था। उसने कई हज़ार दुष्टात्माओं की बात भी सुनी! सुनने की इच्छा होने से पता चलता है कि हम कितना समझे हैं। आज सुनना लगभग लुप्त कला बन गई है, परन्तु यह कहने का कि ''मैं

तुम से प्रेम करता/करती हूं'' सुनने से अच्छा ढंग है।

(4) वह परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा रखने को तैयार था। उस व्यज़्ति का जीवन मानवीय मनोविज्ञान से नहीं, बल्कि ईश्वरीय सामर्थ से बदला था। आपको और मुझे आश्चर्यकर्म करने की शज़्ति नहीं मिली है, जो यीशु के पास थी, परन्तु आज भी परमेश्वर ने हमें अपनी सामर्थ दी हुई है। हमारे पास उसके वचन की सामर्थ है (रोमियों 1:16) और परमेश्वर की सामर्थ हमारे जीवनों में कार्य करती है (इफिसियों 3:20)। आइए हम अपने सीमित संसाधनों पर निर्भर रहने के बजाय उसी पर निर्भर रहना सीखें।

## परिणाम (आयतें 15-20)

घृणित व्यज़्ति तक यीशु के पहुंचने से ज़्या हुआ?

### एक इनसान बदल गया

कुछ परिणाम हम पहले ही देख चुके हैं। उदाहरण के लिए, किसी का जीवन पूरी तरह से बदल गया था। इस व्यज़्ति के यीशु से मिलने से पहले और बाद के जीवन के बड़े अन्तर की कल्पना करना कठिन होगा।

### लोगों पर असर न हुआ

जैसा कि पहले सुझाव दिया गया है, कुछ लोग यह सब देखकर प्रसन्न नहीं थे। इस बात से कि एक मनुष्य बच गया है, वे रोमांचित होने के बजाय ''डर गए'' (आयत 15ख)। स्पष्टतया वे इसलिए डर गए थे, ज़्योंकि उन्हें अपने सूअरों के खोने का डर था। हर संकेत है कि उन्हें लोगों के बजाय सूअरों की अधिक चिन्ता थी। उनकी दृष्टि में आत्माओं के बजाय सूअरों का अधिक महत्व था। विश्वास पर नमकीन मांस भारी पड़ गया था।

लोग ''उससे विनती करके कहने लगे, कि हमारे सिवानों से चला जा'' (आयत 17)। उन्होंने यीशु से वहां रुकने और किसी और व्यज़्ति को, जो दुष्टात्मा से पीड़ित हो, चंगा करने में सहायता की विनती नहीं की, बल्कि, उन्होंने वास्तव में उससे कहा कि ''यहां से चला जा!''

यीशु ने वही किया, जो उन्होंने कहा था। इससे दुखद विनती वे नहीं कर सकते थे, परन्तु मसीह ने उसी के अनुसार किया। वह वहां कभी नहीं रुका, जहां लोगों ने उसे पसन्द नहीं किया और उसने कभी किसी पर परमेश्वर के मार्ग को थोपा नहीं, न ही हम थोप सकते हैं। हम वचन उन्हीं को बता सकते हैं, जो सुनने की इच्छा रखते हों; फिर, यदि लोग कहें, ''चला जा!'' तो चले जाना ही सही है।

### इलाके को शिक्षा मिली

अन्तिम परिणाम, जिसका उल्लेख करना आवश्यक है: लोगों तक पहुंचकर ही, लोगों

तक पहुंचा जा सकता है। आगे की कहानी सुनें:

> और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह जिस में पहिले दुष्टात्माएं थीं, उससे विनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे। परन्तु उस ने उसे आज्ञा न दी, और उस से कहा, अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं। वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिए कैसे काम किए; और सब अचम्भा करते थे (आयतें 18-20)।

यीशु *हम से* भी कह सकता है, "अपने लोगों अर्थात अपने मित्रों, परिवार और पड़ोसियों के पास वापस जा-और उन्हें बता कि प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं और तुझ पर कैसी कृपा हुई है।" कुछ लोग कह सकते हैं, "लेकिन मेरा तो ऐसा कोई मित्र नहीं है, जो कलीसिया का सदस्य न हो।" तो फिर कोई मित्र ढूंढ़ो न। अपने पड़ोस में किसी को मित्र बनाओ। जहां आप काम करते हैं, वहां भी लोगों को मित्र बनाएं। स्कूल में मित्र बनाएं। फिर आप उसे वचन बता सकते हैं। किसी ने कहा है कि सुसमाचार का प्रचार एक भिखारी द्वारा किसी दूसरे भिखारी को बताना है कि रोटी कहां से मिल सकती है। बाइबल इस बात का ऐलान करती है कि सुसमाचार का प्रचार एक पीड़ित व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे दुखी व्यक्ति को बताना है कि उन्हें चैन कहां से मिल सकता है।

## सारांश

चार्ल्स हॉज कई बार पुलपिट में अठारह इंच का स्केल लाते हैं। वह इसे उठाकर, इसकी लम्बाई नापते और कहते हैं, "कुछ मसीही लोग स्वर्ग से इतना ही दूर होंगे।" उस स्केल का एक सिरा अपने सिर से लगाकर, दूसरे को अपनी छाती पर लगाते हैं, और कहते हैं, "सिर से दिल इतना ही दूर है।"[14]

यह सम्भव है कि हम में से बहुत से लोग अपने सिर (दिमाग) में जानते हैं कि हमें दूसरों तक उनकी आवश्यकताओं में सहायता करने और उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए पहुंचना चाहिए-चाहे वे घृणित ही क्यों न हों। इसके साथ ही, यह भी सम्भव है कि यह संदेश कभी हमारे मन तक नहीं पहुंचा। शायद हम कभी दूसरों तक पहुंचने की कोशिश करने को प्रेरित ही नहीं हुए, ताकि हम अपनी समयसारणी को फिर से बनाएं, अपने भय को या जो भी चीज़ हमें उसे करने से, जो हमें करना चाहिए, रोकती है, निकाल नहीं पाते। सचमुच हो सकता है कि हम में से कुछ लोग "स्वर्ग से अठारह इंच" दूर हों।[15]

अन्त में, मैं इस पाठ को हर सम्भव व्यक्तिगत बनाने की कोशिश करता हूं। यीशु हमारे जीवन को स्पर्श करना चाहता है, परन्तु गिरासेनियों की तरह ही वह हम से जबर्दस्ती नहीं करेगा। वह हमें बपतिस्मा लेने के लिए पानी में धकेलेगा नहीं (देखें मरकुस 16:15, 16)। वह आपकी कलाई मरोड़कर आपको गलत अंगीकार करने और सुधरने को नहीं

कहेगा (याकूब 5:16)। आपको अपने जीवन में आज्ञापालन के साथ उसके कदमों में गिरते हुए स्वयं पूछना है। यदि आपने उसे ग्रहण करना है, तो अभी करें।

## नोट्स

मैंने कई बार होने वाले सुसमाचार अभियान के लिए किसी मण्डली को तैयार करने के लिए इस पाठ का इस्तेमाल किया है। मैं उन्हें बताता हूं, ''इस अभियान से हम सबको दूसरे लोगों तक, यहां तक कि घृणित लोगों तक भी पहुंचने के अवसर मिलेंगे।''

आप अठारह इंच का स्केल, जो गज का, जो छत्तीस इंच का होता है, आधा है, ले सकते हैं। यदि आप वहां रहते हैं, जहां मीटर सिस्टम चलता है, वहां आप मीटर का आधा कर सकते हैं। बेशक अठारह इंच के लगभग लम्बी छड़ी का भी इस्तेमाल किया जा सकता है और आप कह सकते हैं, ''यह छड़ी लगभग डेढ़ फुट (या मीटर की आधी) है–और हम में से कुछ लोग स्वर्ग से इतने ही दूरी पर हैं।''

---

टिप्पणियां

[1]इस पाठ के लिए विचार *सरमन्ज फ़ॉर टुडे,* अंक 2 (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1981), 134–41 में प्रैंटिस मीडर, जूनियर के एक प्रवचन से लिया गया। उनके प्रवचन के विचार, जिनका शीर्षक ''रीच आउट, रीच आउट एण्ड टच समवन'' था, इस पूरे पाठ में हैं। [2]चाहें तो आप उन लोगों अर्थात जिन तक वह पहुंचा: दस कोढ़ियों, सामरी स्त्री, धनी जवान हाकिम, जक्कई, क्रूस पर डाकू और अन्य के उदाहरण दे सकते हैं। [3]हमें उसकी देह के *अंग* होना आवश्यक है (रोमियों 12:5)। [4]आप को चाहिए दुष्टात्मा से ग्रस्त होने पर कुछ कहना चाहें तो कहें। जैसे यह मसीह और प्रेरितों के समय में होता था, परन्तु आज नहीं होता। [5]पूरी तरह अन्धेरा नहीं होगा, या वह आदमी उन्हें ''दूर से'' देख नहीं पाया होगा (मरकुस 5:6); परन्तु धुंधला हो गया होगा, या चांद की रोशनी काफ़ी तेज़ होगी। [6]जोअ शुबर्ट, ''ओवरकमिंग फियर,'' *प्रीचर'स पिरियोडिकल* (दिसम्बर 1983): 27. [7]दूसरों के साथ ''बनाए रखना'' एक अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ ''अपने पड़ोसियों की तरह लगने की कोशिश करना'' है। [8]समाज का एक सामान्य व्यवहार, किसी समस्या के होने पर, उस समस्या की निजी ज़िम्मेदारी लेने के बजाय यह सुझाव देना है कि ''इसे देखने के लिए एक और सरकारी कार्यक्रम चलाया जाए।'' इसे अपने क्षेत्र की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थिति के लिए इस्तेमाल करें। [9]मीडर, 138. भाई मीडर ने सुझाव दिया कि कुछ कलीसियाएं ''भाड़े की बंदूक'' की मानसिकता से पीड़ित हैं। अमेरिका के पुराने पश्चिम में, कई बार लोग अपनी समस्याओं को निपटाने के लिए ''बन्दूकें''(अर्थात, बन्दूकों वाले आदमी) भाड़े पर लेते थे। कलीसिया पर लागू करने पर, ''भाड़े की बन्दूक'' मानसिकता, ''अपने लिए काम करने के लिए प्रचारक को भाड़े पर रखते हैं। यदि वह काम नहीं करता, तो और कर्मियों (अर्थात, और स्टाफ़ की भर्ती) को भाड़े पर लगा दें।'' जैसा कि आप जानते हैं, मज़दूर उतना अच्छा काम नहीं कर सकता, जितना स्वयं किया जा सकता है। हम में से हर किसी को अपना काम आप करना चाहिए। [10]मरकुस 5:15 ध्यान दिलाता है कि दुष्टात्माओं के उसे छोड़ जाने के *बाद* वह आदमी ''सचेत'' था।

[11]यूनानी में ''अथाह गड़हा'' को *abusson* (अन्य शब्दों में, ''पाताल'') कहा गया है। [12]सूअरों का शोर डरावनी फिल्में बनाने वालों द्वारा भूतों वाली फिल्मों की डरावनी आवाज़ें पैदा करने के लिए इस्तेमाल

किया जाता है। [13]अमेरिका में, आम तौर पर सूअर बाड़ों में रखकर चराए जाते हैं। उस बिना बाड़ के देश में (भारत की तरह–अनुवाद) सूअर, गायों और भेड़ों की तरह इधर–उधर चरते थे। [14]बाइबल में ''हृदय'' या मन छाती में मांस के टुकड़े को नहीं कहा गया–परन्तु यह उदाहरण फिर भी उपयुक्त है। [15]यहां पर मैं आम तौर पर मण्डली को नाम और जगह और स्थिति बताकर कोई विशेष चुनौती देता हूं, जिससे उन्हें दूसरों तक ''पहुंचने'' का अवसर मिल जाए।